द्वारा लखिति सी.आई.सी.□म.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:08 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

यीशु इस संसार के इतहिास का केन्□द्र है? समय का वभिाजन भी यीशु के आगमन पर आधारति है□ यीशु के आगमन के पूर्व का समय ईस्□वी पूर्व (बी.सी.) तथा बाद का ईस्□वी सन् (□.डी.) कहलाता है□ वशि्□व के प्रमुख तथ्□यों व मानव इतहिास के महान पुरुषों का वर्णन करने वाले ग्रंथ '□न्□सायक्□लोपीडयिा ब्रटिानकि' में अरस्□तु, सकिंदर महान, प्□लेटो आद महान पुरूषों के बारे में मात्र □क-□क पृष्□ठ कनि्□तु प्रभु यीशु मसीह के बारे में 40 पृष्□ठ लखि गये है□ आखरि ऐसी क्□या अनोखी बात है यीशु में, जो उसे सब लोगों से अलग करती है?
क्□यों यीशु

- सबसे अलग है?
- सबसे वशिषि्□ट है?
- सबसे महान है?
- सबसे अनोखा है?

यीशु अनोखा क्□यों है? बेमसिाल क्□यों है? जबक वह □क छोटे से गांव के गौशाले में पैदा हुआ□ उसकी माता □क साधारण परवािर की महलिा थी□ लोग जसि उसका पति कहते थे वह □क बढ़ई मात्र था□ जीवन के प्रथम 30 साल उसने □क गांव में गुजारे□ वहां उसने अपने पति की कार्यशाला में काम कयिा□ जीवन के अंतमि तीन साल वह □क प्रचारक रहा□ उसने कभी कोई पुस्□तक नहीं लखिी□ वह कभी कॉलेज नहीं गया□ उसका न तो कोई परवािर था न ही कोई मकान□ वह कभी कसिी बड़े शहर में नहीं रहा□ अपने गांव की सीमा से 125 मील से अधकि दूर उसने कभी यात्रा नहीं की□ उसका कोई कार्यालय नहीं था□ उसने कभी कोई इमारत नहीं बनवायी□ उसके प्रचार और उसकी बातों से जनता उसके खलिाफ हो गयी□ उसके मति्रों ने उसका साथ छोड़ दयिा□ उसे अदालत ले जाया गया□ उस पर झूठा मुकद्दमा चलाया गया□ उसे दो कुकर्मयिों के बीच क्रूस पर मृत्□युदण्□ड दे दयिा गया□ उसकी यद कोई जायदाद थी तो वह थी वस्□त्र की मात्र □क जोड़ी जसि क्रूस के नीचे सपिाहयिों ने चटि्ठी डालकर बांट लयिा□ मृत्□यु के बाद उसे रखा भी गया तो कसिी दूसरे व्□यक्त िकी कब्र में ......... □

फरि करीब 2000 वर्ष आये और चले गये□ कनि्□तु आज भी यह व्□यक्त ियीशु मानव इतहिास का केन्□द्र बना हुआ है□

- जतिनी सेनाओं ने आज तक युद्ध कयिे,
- जतिने राजाओं ने अब तक राज्□य कयिे,
- जतिने संसद के सत्र आज तक संसार में हुये,
- जतिने राष्□ट्रपत िऔर प्रधानमंत्री अब तक हुये,
- उन सबसे कहीं बढ़कर इस अकेले व्□यक्त ियीशु ने संसार के लोगों को सबसे अधकि प्रभावति कयिा है□
- आज संसार के लगभग 64% लोग उसके अनुयायी हैं□
- आखरि क्□यों यीशु अनोखा है?
- यीशु अनोखा है उसके वचनों (कथनों) के कारण

यीशु की लोकप्रयिता नरिन्□तर बढ़ रही थी□ लोग उसके पीछे चलने लगे थे, उसकी बातें सुनने को बड़ी भीड़ जमा होने लगी थी□ जगह-जगह उसकी चर्चा थी□ इससे फरीसी व महायाजक चतिति व घबराये हुये थे□ उन्□होंने मंदरि के सपिाहयिों को पूरे अधकिार व हथयिारों से पूरण सुसज्जति कर यीशु को पकड़ने भेजा□ सपिाही खाली हाथ लौटे□ उन्□होंने बताया क यीशु के वचन अनोखे थे□ ''आज तक ऐसी बातें कसिी ने कभी नहीं कहीं जैसी वह कहता है''

(यूहन्□ना 7:46)□ प्रभु यीशु की बातों में, उसके शब्□दों में, बात कहने के उसके तरीके में ऐसा अधिकार था कि हथियार बंद व अधिकार संपन्□न ये सपिाही उसे पकड़े बिना खाली हाथ लौट आये□

यीशु की बातें दुनिया की बातों से भिन्□न थीं□ उसने कहा, ''जो अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खो□गा, परन्□तु जो ..... अपना प्राण खोता है, वह उसे बचा□गा'' (मरकुस 8:35)□ ..... ''यदि कोई मर भी जाये तो फिर भी जी□गा'' (यूहन्□ना 11:25) ..... ''जो प्रधान होना चाहे, वह सबका दास बने'' (मरकुस 10:44)□ यीशु ने इस संसार से बिल्□कुल भिन्□न बातें कहीं□ लोगों ने ऐसी बातें कभी नहीं सुनी थीं□ यीशु की बातें पवित्र बाईबल में पायी जाती है□

□ कबार गलील की झील में तूफान आयां□ प्रचंड वायु चली नौका डगमगायी□ तब यीशु आया□ उसने आंधी को डांटा□ पानी को शांत किया उसने कहा ''शांत रह□ थम जा'' (मरकुस 4:39)□ लोगों ने अचरज से कहा ''यह कौन है कि आंधी और पानी भी उसकी आज्□ा मानते है'' (मत्□ती 8:27)□ जब यीशु बोलता है तो सृष्□टि भी सुनती व मानती है□

□ कसूखे अंग वाला व्□यक्□ति जो कभी चला नहीं□ यीशु ने उससे कहा, ''उठ अपनी खाट उठाकर चल फिर'' (यूहन्□ना 5:8) और वह चलने लगा□

- यीशु के वचन मात्र से अंधे देखने लगते है□
- कह देने से लंगड़े चलने लगते है□
- शब्□द उच्□चारण मात्र से कोढ़ी शुद्ध हो जाते है□

चार दिनों के मुर्दा लाजर को यीशु ने पुकारा, 'हे लाजर निकल आ' (यूहन्□ना 11:43) और वह कब्र में से निकल आया□ यीशु ने ''हे लाजर इसलिये कहा कि□ योंकि यदि वह केवल'' ''निकल आ'' कहता तो सारे संसार की सारी कब्रें खुल जाती और सारे मृतक निकल आते□ इतना अधिकार है यीशु के वचनों में□ यह सच है कि हमारी बोली हमारा भेद खोल देती है□ प्रभु यीशु मसीह के बोलने में, उसके वचनों में अधिकार है□ उसकी बोली उसका भेद खोल देती है कि वास्□तव में -

- यीशु सृष्□टिकर्□ता है□
- यीशु मुक्□तिदाता है□
- यीशु स्□वयं परमेश्□वर है□

यीशु अनोखा है : उसके व्□यवहार के कारण

''उसने गाली सुनते हुये गाली नहीं दी, दु□ख सहते हुये भी ध□मकियां नहीं दीं'' (1 पतरस 2:23)□ प्रभु यीशु मसीह ने पापियों को नाश नहीं किया

परन्□तु उन्□हें क्षमा किया□

□कमहिला व्□याभचिार करते हुये पक्ड़ी गयी□ व्□यवस्□था केअनुसार उस पर पथराव होना चाहि□ था परन्□तु यीशु ने कहा कि व्□यवस्□था का पालन करने केलयि तुम उस पर पथराव तो करो लेकनि पहला पत्□थर वही मारे जसिने कभी पाप न किया हो□ इस प्रकार प्रभु ने उसे बचा लिया□ यीशु इस संसार में आया, पापियों को बचाने केलयि, उद्धार देने केलयि□ उसका संदेश था कि जो जैसा है, जहां है, जसि दशा में है, यदि मन फरि ले तो परमेश्□वर उसे स्□वीकार करेगा□ पापनी स्□त्री, व्□याभचारिणी महिला, सामरी स्□त्री, हेरा-फेरी करने वाला, चोर, डाकू, हत्□यारा इत्□यादि सबको यीशु ने स्□वीकार किया, क्षमा किया□

यीशु का संदेश था कि तुम्□हें पापमय जीवन जीना नहीं है□ पापों का बोझ उठाना नहीं है मैं तुम्□हारे लयि □कबेहतर जीवन लाया हूं□ उसने पापियों को क्षमा किया□ यहां तक कि जिन्□होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, उसे मारा था, क्रूस पर अपनी मृत्□यु से पूर्व असहनीय पीड़ा सहते हुये भी उसने उनके लयि प्रार्थना की ''हे पिता, इन्□हें क्षमा कर क्□योंकि ये नहीं जानते कि ये क्□या कर रहे हैं'' (लूका 23:24)

प्रभु यीशु मसीह आज भी संसार केसब लोगों को बुला रहा है कि उनकेपापों को क्षमा करे, उन्□हें मुक्ति दे, अनन्□त जीवन प्रदान करे□ आज संसार में केवल प्रभु यीशु मसीह ही सच्□ची शांति, प्रेम और क्षमा दे सकता है□

• यीशु अनोखा है : उसकेपाप रहति होने केकारण

प्रभु यीशु मसीह कुंवारी मरयिम केगर्भ से जन्□मा□ पवित्र-आत्□मा की सामर्थ्□य से मरयिम गर्भवती हुई थी और यीशु का जन्□म □कपाप रहति प्रक्रयिा से हुआ□ वह 33 साल इस संसार में रहा□ इन 33 सालों में उसने कभी कोई पाप नहीं किया□ पाप रहति जन्□म, पाप रहति जीवन था यीशु का□ लोगों ने उसकेविरूद्ध षड़यंत्र रचा, राजनैतकि नेताओं, धार्मकि अगुवों और न्□यायपालकि केप्रमुखों ने उसे फंसाना चाहा□ उसमें अपराध ढूंढना चाहा परन्□तु कोई उसमें किसी प्रकार का पाप न ढूंढ सके□ यहां तक कि उसकेविरोधी भी उसमें कोई दोष ढूंढ न पाये□ पलितुस ने अदालत में कहा ''मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता'' (लूका 23:14)□ रोमी सूबेदार ने उसकी मृत्□यु को देखकर कहा ''यह नश्□चय ही परमेश्□वर का पुत्र था'' (मत्□ती 27:54)□ उसकेसाथ क्रूस पर सजा पा रहा डाकू कहता है, ''इस मनुष्□य ने कोई अपराध नहीं किया'' (लूका 23:4)□ यहूदा इस्□करयिोती (जसिने उसे धोखा देकर पक्ड़वाया था) ने कहा, ''मैंने नरि्दोष का लहू बहाया है'' (मत्□ती 27:4)□

प्रभु यीशु पाप रहति था, वह स्□वयं परमेश्□वर था वह खोये हुओं को बचाने और पापियों का उद्धार करने आया था□ □कटीकाकार ने कहा है ''यदि आप यीशु केपीछे चलते हो तो न केवल पाप रहति हो जाते हैं लेकनि पाप से रक्□ति होते जाते हैं□''

आज आपकी आवश्□यक्ता है कि लोगों को नहीं कनि्□तु यीशु को देखें यदि हम लोगों को देखेंगे तो बहुत संभव है कि ठोकर खा जायें□ कनि्□तु प्रभु यीशु को देखेंगे तो हर परस्□थति में, हर समय में हमें □कआदर्श दखिाई देगा□ हर परस्□थति से गुज़रने की शक्ति वह हमें देगा□ तब ही हम उसकेमार्ग पर चल सकेंगे□ हम लोगों से बढ़कर यीशु मसीह को देखें□ वह पवित्र है□ आदर्श है□ परपिूर्ण है□ पाप रहति है□

• यीशु अनोखा है : परिवर्तन लाने के कारण

यीशु लोगों को बदल देता है□ □क व्□यक्ति था शाऊल जो मसीहियों को सताता था□ क्लीसिया पर सताव लाता था मसीही अगुवों की हत्□या में शामिल होता था□ उसने प्रभु यीशु की आवाज सुनी□ उसे स्□वीकार किया बदल गया, वह मसीहियों को जोड़ने वाला, क्लीसियाओं को स्□थापित करने वाला बन गया□ □क पापिनी स्□त्री थी जो व्□याभिचार में लिप्□त थी, समाज में घृणा की पात्रा थी वह प्रभु यीशु से □क छोटी मुलाकात ही में पूरी तरह बदल गयी□ उसकी प्रचारिका बन गयी□ क्रूस पर □क डाकू लटका हुआ था□ महज तीन घंटे यीशु के संपर्क में आकर उसका हृदय परिवर्तन हो गया□ वह अनंत जीवन का वारिस बन गया□ कुछ साधारण मछुआरे थे□ वे प्रभु की पुकार सुनकर उसके पीछे चले और संसार में उलट-पेर कर गये□ यीशु की शिक्षाओं से विश्□व को नयी दिशा देने वाले अगुवे बन गये□ □क महसूल (चुंगी कर) लेने वाला व्□यक्ति था□ प्रभु यीशु उसके घर गया उसके साथ भोजन किया वह लेने वाला नहीं किन्□तु देने वाला बन गया शोषण की जगह उदारता ने ले ली□
न केवल लोग, किन्□तु परिस्थितियां भी बदल जाती हैं□ □क बार यीशु अतिथि बन कर विवाह भोज में गया□ उसने पत्□थर के मटकों में पानी भरवाकर प्रार्थना की□ पानी दाखरस में बदल गया□ यीशु नाईन नगर को गया□ वहां उसने □क युवक का जनाजा निकलते देखा उसकी विधवा माता के आंसुओं पर तरस खाया और मृतक युवक को जीवित कर दिया□ शव-यात्रा बदल गयी जीवन के उत्□सव में जहां दु□ख और निराशा का अंधकार था वहां जीवन और आनन्□द का प्रकाश छा गया□

आज भी ऐसे असंख्□य लोग हैं संसार के कोने-कोने में जो इस बात के गवाह हैं कि कैसे यीशु ने उनके जीवन को प्रभावित किया और बदला है कैसे जीवन की जटिल परिस्थितियों को सरल किया है□ आज परमेश्□वर का वचन आपको चुनौती देता है चाहे आप कैसी भी समस्□या में क्□यों न हों चाहे आप कैसी भी पापमय दशा में क्□यों न हों□ यीशु आपको स्□वीकार करने के लिये आपके जीवन में नयी राह बनाने के लिये आपको अपनी शक्ति से भरपूर करने के लिये बुलाता है□ वह आपके जीवन को बदल सक्ता है□ वह आपकी परिस्थितियों को बदल सक्ता है□

• यीशु अनोखा है : उसकी मृत्□यु और फिर जी उठने के कारण

बाइबिल में यीशु की मृत्□यु के विषयों में अनेक भविष्□यवाणियाँ पायी जाती हैं स्□वयं प्रभु यीशु ने अपने जीवन काल में अपनी मृत्□यु और पुन□ जीवित हो जाने के संबंध में भविष्□यवाणी की थी□ जब क्रूस पर प्रभु यीशु की मृत्□यु हुई तो बड़ा भूकंप आया□ चट्टानें तड़क गयीं□ पृथ्□वी पर अंधेरा छा गया□ मंदिर का परदा फट गया□ सारी सृष्टि उसकी मृत्□यु की पीड़ा के अनुभव से गुजरी□ ऐसा इसलिये हुआ क्□योंकि स्□वयं सृष्टिकर्ता अपनी सृष्टि को बचाने के लिये अपने प्राण न्□यौछावर कर रहा था□ क्रूस की मृत्□यु द्वारा यीशु ने सारी मानव जाति के लिये पापों की कीमत चुका दी जो निष्□पाप था उसने सारे संसार के पापियों के प्रायश्चित के लिये अपना बलिदान कर दिया□ हमारे लिये उद्धार और अनन्□त जीवन का मार्ग खोल दिया□ मृत्□यु अब हमारी नियति नहीं रह गयी□ मृत्□यु अब हमारा अन्□त नहीं किन्□तु अनन्□त जीवन का द्वार बन गयी□ यीशु की मृत्□यु में मृत्□यु की मृत्□यु हो गयी□ मृत्□यु पर विजय प्राप्□त कर यीशु तीसरे दिन फिर जीवित हो गया फिर कभी न मरने के लिये□ दुनिया में ऐसा न कोई हुआ है, न कभी होगा जिसने मौत को सदैव के लिये पराजित कर दिया हो□ इसलिये यीशु कहता है, ''क्□योंकि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे''
(यूहन्□ना 14:19) इसलिये हमें भी अनन्□त जीवन की आशा है□

• क्□या आप अनन्□तजीवन व अनन्□त शांति पाना चाहते है?

तो आज ही प्रभु यीशु मसीह को अपने दिल में जगह दें□ उस पर विश्□वास करें□ निश्□चय जान लें कि उसने आपके पापों की कीमत चुका दी है जो कोई

द्वारा लिखित सी.आई.सी.□ म.
मंगलवार, 29 अगस्त 2006 16:08 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:57

प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण करता है उसे आज भी पापों की पूरी क्षमा, पूरी शांति और अनन्त □ जीवन प्रदान करता है□ क्या आप तैयार है? आइये प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में ग्रहण कर परमेश्वर के अनोखे प्रेम □ वं उसकी असीम शांति का अनुभव कीजिये□

अधिक जानकारी □ वं पत्राचार पाठ्क्रम के लिये सम्पर्क कीजिये□ -

साहित्य □ वं प्रकाशन विभाग
सेन्ट्रल इण्डिया क्रिश्चियन मिशन
पोस्ट बाक्स □ 11, दमोह (म.प्र.) 470661 फोन : 07812-222500 फैक्स : 07812-223301